बे-मोल है बिरहोरों का ज्ञान

आलोका

झारखंड में आदिम जनजाति बिरहोर के परंपरागत ज्ञान और कला रस्सी बनाना रहा है। जंगल कटने से उनके इस परंपरागत ज्ञान और कला पर असर पड़ा है। पहले जंगल से वन उत्पाद और पेड़ की छाल ला कर रस्सी बनाते थे। अभी भी रस्सियों के लिए बिरहोर प्रसिद्ध रहे हैं। पहले सालों भर महिला पुरुष मिलकर रस्सी बनाने का काम करते थे। जंगलों से अनेकों प्रकार के चोप लाकर घर में पुरुष एवं महिलाएं दिन भर रस्सी बनाती थीं और पुरुष उसे घूम-घूम कर बेचते थे। उनकी रस्सी आसपास के गांव के किसान अपने बैल-गाय आदि को बांधने, पानी भरने के अलावा कई प्रकार के काम में उपयोग करते थे। उस वक्त रस्सी बनाने के जो स्रोत थे वे जंगलों के उदाल, सबई, माहलन, गुंगूपता, तोंबा, बेंदी तलेत, कुंभही तथा खेती से सन, ढैचा इत्यादि से चोप प्राप्त कर तरह-तरह की रस्सियों एवं उपकरणों का निर्माण करते हैं। आज इन रस्सियें का मूल्य इस प्रकार है- सिका 25 रुपये से 60 रुपये तक, लाइठ बरहा 60 रुपये, डोरी चार रुपये, संगा जोती 12 रुपये प्रति जोड़ा, पगहा छह रुपये, पइनरा जोरी छह रुपये, छोटी डोरी दो रुपये, खाटी रस्सी आठ रुपये से दस रुपये प्रति किलो। (स्रोत जनजातीय कल्याण शोध संस्थान)

वह समय था जब बिरहोर किसानों की जरूरत के लिए रस्सी बनाकर किसानों को सहायता करते थे। उस वक्त बाजारों में रस्सी की दुकानें होती थीं बिरोहर कतार में बैठ कर रस्सी बेचते थे। रस्सी के लिए अलग बाजार हुआ करता था। 60 साल बाद आज वह स्थिति बिरहोरों के पास नहीं रही। उनकी रस्सी बनाने की कला तो जीवित है पर वह बाजार बदल गया। जंगल का स्वरूप बदल गया। रस्सी बनाने की सामग्री बदल गयी।

किसानों की जरूरतें बदल गयीं। बिरहोरों और किसानों की जरूरतों में फर्क आ गया।

किसान अब ट्रैक्टर से खेती करने लगे हैं। आधुनिक सामान गांव में प्रवेश कर गया है। गांव में पहले जहां लेन-देन की प्रथा थी, वह बदल कर सीधे खरीद-बिक्री पर नियंत्रित हो गयी। देसी हूनर नकार दिये जाने लगे। जहां कभी पेड़ की छाल की रस्सी बनती थी, वहां अब सीमेंट के बोरे की रस्सी बन रही है। बिरहोरों ने रस्सी बनाने के काम को जीवित तो रखा पर उसके बनने की चीजे बदल गयीं। अब वह बाजार उनके पास नहीं। अब गांव को उनकी कला की जरूरत नहीं है। गांव में अब उनकी रस्सी 20 रुपये में बिक रहीं है। ऐसी स्थिति में परंपरागत ज्ञान का और परंपरागत जरूरत खत्म होने के कगार पर है। अब बिरहोर सिर्फ रस्सी बनाने के काम में कर रहे है। झारखंड सरकार के पास कई ऐसे विभाग हैं जैसे खादी ग्रामोद्योग विभाग, लघु उद्योग विभाग और कला विभाग। इन विभागों ने कभी बिरहोरों की कला को तरजीह नहीं नहीं दी। वे चाहते तो इन्हें कई अलग-अलग कला की जानकारी दे कर उनके उद्योग को बाजार और दुनिया के स्तर पर रख सकते थे। इस ओर इन विभागों के आला अधिकारियों और राजनेताओं का ध्यान नहीं है।

सुबह की धूप पत्रिका में शुभकामना/ विज्ञापन के लिए संपर्क करें

विजय कुमार मेहता
मो. 08674954211
हिमांशु कुमार सिन्हा
मो. 098304197580
एस. एम. शाहनवाज
मो. 09709181255
e-mail : subahkeedhoop@gmail.com